Qes. :- What is Public opinion? How it is formed?
or, what are the stages which involved in the formation of public opinion?

Ans. :- जब किसी समस्या पर जनता में differences होते हैं, तो ऐसी हालत में Public opinion जानने की जरूरत (प्रमाणित) हो उठती है। आधुनिक युग में Public opinion को voice of democracy कहा जाता है। इसके अर्थ को समझने के लिए public, opinion शब्दों के अर्थ को अलग अलग समझना होगा।

किसी आम समस्या पर जिन-जिन लोगों का विचार Common होता है, उन्हें public की संज्ञा दी जाती है। Public में face to face contact की कोई जरूरत नहीं होती। अतः विभिन्न स्थानों में रहने वाले लोग भी एक खास public का निर्माण कर सकते हैं। M. Lee के अनुसार "Public is a group of any size in which the members are more or less conscious of common interests." Public के अन्तर्गत वैसे news paper readers को भी रखा जा सकता है, जो paper में छपे किसी मुद्दे पर विशेष जागरूकता दिखलाते हों। इस तरह public एक ऐसा association है, जो किसी चलती फिरती घटना के साथ थोड़े समय के लिए अपना सम्बन्ध रखता हो।

जहाँ तक opinion का प्रश्न है, जिस विषय या घटना के बारे में हम यह सोचते हैं कि वह सही है opinion कहलाती है। "opinions are what we think to be true, where as beleives are what we know to be true". ALVING के अनुसार scisputed issue पर दिए गये विचार को opinion कहा जाता है। और इससे भीतरी मनोवृत्ति की बाहरी अभिव्यक्ति होती है।

Public और opinion के analysis से यह स्पष्ट हो जाता है कि Public opinion उन विचारों का एक collective form है, जो कमी-बेशी निश्चित होती है, और उसमें एक स्थायित्व होता है। CLYDE KING (1928) के अनुसार, किसी समस्या पर विचार पूर्ण निर्णय को ही Public opinion कहते हैं।

P.T.O.→

Scanned with CamScanner

जो वाद-विवाद के पश्चात ही बना करता है। यह हमेशा majority के विचारों को represent करता है। K Young ने इसे define करते हुए लिखा है कि — "Public opinion consists of the opinion held by majority of the people regarding a particular issue of a particular time and place". इस परिभाषा के अनुसार Public opinion परिवर्तनशील होता है, स्थिर नहीं। यह हमेशा विभिन्न व्यक्तियों की आपसी interaction के पश्चात ही निर्मित होता है। Dorb, Coolie, Reuter, Blumer इत्यादि सभी मनोवैज्ञानिक इसी तथ्य को support करते हैं।"

Public opinion का निर्माण विभिन्न परिस्थितियों में होता है। आम तौर से यह देखा गया है कि जब कभी customs और ideal लोगों की जरूरतों को संतुष्ट करने में असफल होते हैं, जब कोई नई जरूरत सामने आती है, Personalities के बीच differences दिखायी पड़ता है, कोई prestige suggestion दिया जाता है, समाज के अधिकांश लोग social facilitation के stage से गुजर रहे होते हैं, और जब प्रचार कार्य भरपूर होता है, तो ऐसी परिस्थिति में Public opinion की आवश्यकता प्रगट होती है। कुल मिलाकर समाज मनोवैज्ञानिक public opinion के निर्माण में निहित निम्नलिखित पाँच stages को जरूरी मानते हैं—

(1) Stage of Preliminary definition :— जनमत बनने के लिए सबसे पहले किसी समस्या (issue) का उत्पन्न होना जरूरी होता है। यह सभी जानते हैं कि समस्याओं की पैदाईस अलग अलग कारणों से होती है, और हमें सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सुरक्षा सम्बन्धी समस्याऐं आए दिन देखने को मिलती हैं। ज्योंही समाज के के अधिकांश लोग किसी खास समस्या के nature और definition पर विचार विमर्श करना शुरू कर देते हैं। यह public opinion के निर्माण का first stage माना जाता है।

(2) Stage of explaration :— नई समस्या के विषय में अब आरम्भिक छान बीन शुरू हो जाती है। इस stage में यह आंकने की कोशिश की जाती है कि कितनी complex है, और उसे किस हद तक solve किया जा सकता है। समस्या को solve करने के सिलसिले में negociation तर्क वितर्क, newspaper, Radio और Television आदि important agencies की मदद ली जाती है।

Scanned with CamScanner

इस दिशा में experts की राय भी अपना खास महत्व रखती है। चूंकि जनमत निर्माण के इस stage में समस्या समाधान के लिए सोच-बीन का महत्व बढ़ जाता है। अतः इसे stage of exploration कहा जाता है।

③ Stage of conflict and debating :- समस्या की आरम्भिक छान-बीन के बाद संघर्ष और वाद-विवाद की समस्या आती है। समस्या में रुची रखने वाले लोगों की तरफ से विभिन्न सुझाव या योजनाएँ पेश की जाती हैं। मगर चूंकि सभी व्यक्तियों का सुझाव एक जैसा नहीं होता, इससे विभिन्न लोगों और groups में विवाद और तनाव प्रकट हो जाते हैं। जहाँ कुछ लोग एक विचार का समर्थन करते हैं, तो दूसरे लोग उससे असंतुष्टी दिखलाते हैं और किसी दूसरे विचार को अपनाने का सलाह देते हैं। एक तरह से इस stage में लोगों का व्यवहार crowd की तरह होने लगता है। नारेबाज़ी और Pamphletes के use भी देखने को मिलते हैं। लोगों के व्यवहार ज्यादा उग्र और emotional हो जाते हैं। फिर भी, rationality से बिलकुल हटा नहीं जा सकता। ऐसे समय में विशेषज्ञों की राय, विभिन्न mass medias जैसे Radio, Newspaper, cinema, आदि से प्राप्त समाचार तथा दूसरे Emotional suggestions काफी कारगर साबित होते हैं। और इनसे जनमत को एक मुक्त रूप लेने में बहुत हद तक मदद मिलती है।

(4) Stage of agreement :- संघर्ष और विचारों में emotional intensity के बाद जो अवस्था आती है, उसे हम stage of agreement कहते हैं। यहाँ suggestions का तुलनात्मक study करके एक general conclusion पर पहुँचने की कोशिश की जाती है। यह अपेक्षाकृत "cooling period" कहलाती है। मगर इसका अर्थ यह नहीं होता कि लोग यहाँ एक मत हो जाते हैं। सच तो यह है कि जिससे अधिकांश लोग सहमत हो वही general consencious बना करता है। Kuppuswami के अनुसार- "At no time will there be complete agreement of an issue where public opinion is involved There may be only shifts."

(5) Stage of the final formation of public opinion :- लोगों द्वारा general consencious पर पहुँचने के बाद अब ऐसी अवस्था आती है, जबकि majority के विचार एक law की शक्ल धारण कर लेते हैं।

P.T.O →

जो कभी-कभी majority के लिए दरअसल वही public opinion कहलाता है। अब वह समय आता है, जबकि majority के public opinion को action में translate किया जाए। सचमुच अब Public के action उसी के मुताबिक होने भी लग जाते हैं। social scientists इसी climax को Public-opinion की संज्ञा देते हैं, जिसे कभी supreme court of society अथवा voice of God अथवा general will (Lowell) के नाम देते हैं। इस तरह विभिन्न stages से बना हुआ Public opinion बन जाता है, जैसा कि SCHMOLLER ने बताया — " Public opinion thus works like a harp of a million strings upon which the play winds from all directions." — Schmoller.

---x---